ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे   निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27   अंकः 79   बुलेटिन अवधिः 06–10 अक्टूबर, 2018   दिनः शुक्रवार   दिनाँकः 05 अक्टूबर, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान–नैनीताल				
	06/10/2018	07/10/2018	08/10/2018	09/10/2018	10/10/2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	23	23	23	22	22
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	10	10	11	11	12
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	साफ	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	80	75	70	75
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	35	35	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	004	004	006	004
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (28 सितम्बर – 04 अक्टूबर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक से मध्यम बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 22.2 से 23.3 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 10.3 से 13.3 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- राई एवं पीली सरसो की उत्तम किस्मो की बुवाई अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े में करें। बुवाई हेतु कतार से कतार की दूरी 45 सेमी, गहराई 4–5 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी तथा बीज दर 4–5 किग्रा/है0 रखें।
- बुवाई से पूर्व राई के बीज का शोधन थायरम 2.5 ग्राम/किग्रा बीज दर से करें।

- खरपतवार नियंत्रण हेतु पेंडिमेथलीन 30 ईसी की 3.3 लीटर मात्रा को 800–1000 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई के तुरंत बाद जमाव से पहले छिड़काव करें।
- शरदकालीन गन्ने की बुवाई 15 अक्टूबर तक पूर्ण कर लें।
- धान में भूरा पर्णधब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब का 2.5 ग्राम/लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मक्का की फसल मे पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

उद्यानप्रबन्धः

- ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में सब्जी मटर की फसल या तो फूल आने की अवस्था में होगी या लगभग फूल आ चुकें होंगे, में गुड़ाई के पश्चात् दो पंक्तियों के बीच में पड़ी खाली जगह में नमी संरक्षण हेतु एक से दो से0मी0 मोटी पलवार पदार्थ की परत बना लें। इससे न केवल सब्जियाँ अच्छी गुणवत्ता वाली होंगी अपितु उत्पादन में भी 20–40 प्रतिशत की वृद्धि होगी। इसी तरह की तकनीक को मूली, गाजर एवं शलजम सब्जियों में भी अपनाएँ।
- तैयार खेतों में तथा पॉलीहाउस के भीतर लगी सब्जी राई की पौंध प्रतिरोपण हेतु तैयार है तो अपराहन के समय 50 x 40 से0मी0 की दूरी पर प्रतिरोपण करें।
- मध्यम व ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में, मटर, मूली, बन्दगोभी, फूलगोभी फसलो में गुड़ाई के पश्चात् पलवार का प्रयोग करें ताकि नमी संरक्षण हो सके।
- घाटी क्षेत्रो में, घरेलू खपत के लिए सिंचित दशा में बन्दगोभी एवं फूलगोभी स्नोबॉल समूह का प्रतिरोपण करें।
- घाटी क्षेत्रो में, यदि बरसात समाप्ति पर है तथा खेत में पानी नही रुकता हो तो प्रथम सप्ताह में अर्किल मटर की बुवाई करें।
- टमाटर एवं मिर्च की फसल मे जड़ एवं तना संधि सड़न रोग के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडरमा 10 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिंचाई करें।
- फ्रासबीन की फलिया सड़ने एवं सफेद फफूंदी की बढ़वार दिखाई पड़ने पर कार्बन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- शीतोष्ण फल वृक्षों के थालो की सफाई करना प्रारम्भ करें तथा नये बगीचे लगाने के लिए खाके का कार्य प्रारम्भ करें।
- सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम इत्यादि फल वृक्षों की गिरी पत्तियों को इकट्ठा करके गढ्ढे मे डाले तथा बीमार एवं रोगग्रसित पत्तियों को जलाकर नष्ट कर दें।

पशुपालनप्रबन्धः

- प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- पशुओं के लिए हरे चारे में दलहनी चारा सर्वोत्तम आहार है जो पशुओं के जीवन यापन के साथ–साथ उत्पादन में भी सहायक होता है। अतः पशुपालकों से निवेदन है कि पशुओं को स्वस्थ रखने व अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु सर्वोत्तम दलहनी चारा (बरसीम) अवश्य बोयें क्योंकि 5 कि0ग्रा0 बरसीम (हरा चारा), 1 किलो ग्राम सान्द्र आहार के बराबर होता है।
- इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ग्भामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।
- प्रसव के 2 घंटे के भीतर नवजात की अच्छे से सफाई करने के उपरान्त उसको निश्चित रूप से थोड़ी मात्रा (1/2 – 1 कि0ग्रा0) खीस पिला दें।
- पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
- जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उस से सही उत्पादन प्राप्त हो सके।

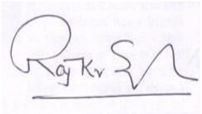

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो. ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर